अध्याय - 4
नगरीकरण की प्रवृत्तियॉ एवं जनांकिकीय अभिलक्षण

4.1 परिचय -

नगर क्षेत्रीय आर्थिक संरचना के ही उत्पाद हैं जो कुछ समय तक एक संगठित ढांचे से जुड़े रहते हैं और यही कारण है कि अब उन्हें 'विकास केन्द्रों' एवं 'विकास बिन्दुओं' के पर्यायवाची के रूप में जाना जाता है।[1] इस प्रकार किसी क्षेत्र विशेष की सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों का यथार्थ प्रतिबिम्बन इन नगरों के माध्यम से हो जाता है। इस संकल्पना का मूल आधार यह है कि इन नगरीय अधिवासों की स्थिति, इस कारण शोचनीय नहीं है कि ये संतृप्त हो गये हैं, बल्कि असली कारण यह है कि इनमें सामुदायिक सेवाओं के वितरण की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। जबकि दूसरी ओर दस लक्षीय महानगर एवं नगर समूह एक सीमित क्षेत्र में अत्यधिक नगरीकरण के कारण अत्यंत गंभीर सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं से ग्रसित है।[2]

दुहरी अर्थव्यवस्था का आश्चर्यजनक रूप से विकसित होना एवं असामान्य कार्यकलापों में होने वाली तीव्र वृद्धि, संभावित खतरों की पूर्व चेतावनी है। वर्तमान समय में ज्वलन्त प्रश्न यह है किक्या इन महानगरों को उसी गति से जिससे वे बढ़ रहे हैं, बढ़ने दिया जाये अथवा उनकी समस्याओं का समाधान किया जाये। इन समस्याओं का एकमात्र समाधान यही है कि नगर जो कि महानगरों एवं ग्रामों के बीच की कड़ी के रूप में है, एवं अधिवासों के पादानुक्रम के मध्य की कड़ी है, का समुचित विकास किया जाये।[3] ग्रामीण अधिवास एवं नगर परस्पर अत्यन्त निकट से जुड़े हैं क्योंकि ये दोनों ही एक ही प्रकार के सामाजिक आर्थिक ढांचे से सम्बन्धित है एवं उनके हित भी एक दूसरे के पूरक एवं परस्पर सम्बन्धित है।

प्रस्तुत अध्याय में नगरों के जनांकिकीय अभिलक्षणों को प्रस्तुत किया गया है। जनांकिकीय संरचना के परिवर्तनशील चरों में जनसंख्या वृद्धि, घनत्व व्यावसायिक संरचना, आयु तथा लिंग संरचना इत्यादि प्रमुख हैं। प्रस्तुत अध्याय में नगरों के प्रमुख जनांकिकीय घटकों का विश्लेषण तो किया ही गया है इसके साथ ही अन्य बड़े एवं मध्यम आकारीय नगरों के जनांकिकीय अभिलक्षणों को भी तुलनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

4.2 नगरीय वृद्धि प्रतिरूप :-

अध्ययन क्षेत्र में मानव बसाव का इतिहास उतना पुराना है जितना गंगा की घाटी में मनुष्य के बसाव का इतिहास है। प्राचीनतम अधिवासों का सम्यक् ज्ञान तत्व जबतक प्राप्त नहीं हो पाता जब तक कि वहां के निवासियों के द्वारा कोई संकेत सूत्र छोड़े न गये हों। बहुत कम अधिवास ऐसे मिलते हैं जहां पर इस तरह के अवशेष पुरातत्व विभाग द्वारा अथवा व्यक्तिगत रूप से लोगों द्वारा प्राप्त किये गये हो। जिससे प्राचीन कालीन मानव के रहन–सहन एवं जीवन शैली की जानकारी प्राप्त होती है।

1947 में स्वतंत्रता मिलने के पश्चात नई आर्थिक व्यवस्था के अन्तर्गत अधिवासों में प्रसार की प्रवृत्ति विकसित हुई। 1950–51 में जमींदारी तथा जजमानी व्यवस्था में ह्रास, भूमि की चकबन्दी, प्राचीन मान्यताओं का अलिखित होना, यातायात के साधनों का विकास विद्युत, सिंचाई, बैंक माध्यम से नई कृषि प्रणाली खाद एवं कीट नाशक दवाइयों एवं मशीनरी के उपयोग से अर्थ व्यवस्था में परिवर्तन आया। जनसंख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि के कारण कृषि भूमि का निरन्तर प्रसार होने के फलस्वरूप जंगल कटने लगे और ऊसर भूमि पर बड़े पैमाने पर कृषि प्रारम्भ कर दी गयी जिसका दुष्परिणाम क्षेत्र के पारिस्थैतिक संतुलन पर पड़ा।

नई प्रशासनिक संस्थाएं जैसे – विकासखण्ड, न्याय पंचायत, सार्वजनिक

भवन जैसे प्राथमिक विद्यालय, ग्रामीण स्वास्थ्य केन्द्र, पंचायत भवन, पुस्तकालय आदि ग्रामीण भूदृश्यों को परिवर्तित करने में काफी सहायक हुए। औद्योगक अवस्थानों के पास नये अधिवास निर्मित हो रहे हैं। जिसमें 1500 से अधिक जनसंख्या के गांव पक्की सड़कों से जुड़ने लगे और ग्रामीण क्षेत्र में पेयजल सुविधा और स्वास्थ्य सुविधा से एक नये युग का प्रारम्भ हुआ। परिणामस्वरूप कृषि के आसपास व परिवहन मार्गो के समीप नये अधिवास निर्मित होने लगे।

औरैया जनपद के क्षेत्रीय अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि प्राचीन ग्रामीण अधिवास यद्यपि 50 वर्षो से अपनी पूर्व स्थिति में हैं लेकिन उनसे निकले हुये लोग गांवों से बाहर बड़े पैमाने पर छोटे–छोटे पुरवों का विकास किये हैं। प्रसार की यह प्रवृत्ति सुरक्षा की द्योतक हैं और इस तरह के फार्मस्ट्रीट (Farm Street) अधिवास कृषि उत्पादन वृद्धि में भी सहायक होते हैं, क्योंकि मुख्य ग्राम से खेती तक आने–जाने में जो समय नष्ट होता है वह समय किसान अपने खेतों में लगाते हैं, परिणामस्वरूप उत्पादन में वृद्धि होती है। उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि विगत एक हजार वर्ष के इतिहास में जनपद में कई बार उत्थान, पतन की स्थितियां आयी और जितने भी शासक यहां पर आये अधिवासों के रूप में या उनके नामकरण के रूप में कुछ न कुछ संकेत छोड़ते गये जिससे स्वतंत्रता के पूर्व क्षेत्रीय विकास अवरूद्ध एवं असंतुलित रहा था।

जनपद औरैया में जनगणना वर्ष 1901 में मात्र 2 नगर थे जिनमें 14998 व्यक्ति निवास करते थे। वर्ष 1911 में कस्बों की संख्या 2 ही रही परन्तु जनसंख्या घटकर 11992 व्यक्ति हो गई। सम्पूर्ण वृद्धि –20.04 प्रतिशत रही। जनगणना वर्ष 1921 में जनसंख्या बढ़कर 12074 हो गई तथा 1931 में 1.18 प्रतिशत वृद्धि के साथ नगरीय जनसंख्या 12216 व्यक्ति हो गई। जनगणना वर्ष 1941 में नगर केन्द्रों की संख्या बढ़कर 2 एवं जनसंख्या बढ़कर 15704 व्यक्ति हो गई। जनगणना वर्ष 1951 में नगरों की संख्या 2

सारणी क्रमांक 4.1

जनपद औरैया : नगरीय जनसंख्या वृद्धि 1901-2001

जनगणना दशक	औरैया	दिबियापुर	फफूंद	अटसू	अजीतमल	अछल्दा	विधूना	कुल योग	वृद्धि प्रतिशत
1901	7393	—	7605	—	—	—	—	14998	———
1911	5836	—	6156	—	—	—	—	11992	—20.04
1921	6470	—	5604	—	—	—	—	12074	+00.68
1931	7087	—	5129	—	—	—	—	12216	+01.18
1941	9840	—	5864	—	—	—	—	15704	+28.55
1951	13378	—	5327	—	—	—	—	18705	+19.10
1961	17463	—	000	—	—	—	—	17463	—06.60
1971	25517	—	000	—	—	—	—	25517	+46.12
1981	35815	8328	9599	7280	13423	5688	12163	92296	261.70
1991	50772	13687	12190	8528	18332	7144	19275	129928	404.81
2001	64740	20595	15340	10593	24549	8361	24789	168967	+00.30

तथा जनसंख्या बढ़कर 18705 हो गई तथा प्रतिशत वृद्धि 19.10 अंकित की गयी।

जनगणना वर्ष 1961 में नगरों की संख्या 2 ही रही और जनसंख्या भी घटकर 17463 रह गई। वर्ष 1971 में नगरों की संख्या तो 2 ही रही परन्तु जनसंख्या बढ़कर 25517 व्यक्ति हो गई। जनगणना 1981 में नगरों की संख्या पुनः 7 हो गई परन्तु जनसंख्या में तीव्र वृद्धि 261.70 प्रतिशत की वृद्धि अंकित की गई। जनगणना 1991 में नगरों की संख्या यथावत् तथा जनसंख्या 129928 व्यक्ति पहुंच गई और 2001 की जनगणना में यह वृद्धि 168967 व्यक्ति हो गई। विस्तृत विवरण हेतु सारणी क्रमांक 4.1 दृष्टव्य है।

नगरीय जनसंख्या वृद्धि : नगर औरैया (नगर पालिका) :-

सारणी क्रमांक 4.2 को देखने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि औरैया नगर, जनपद का सबसे बड़ा नगर है। जनांकिकीय समंकों के आधार पर देखा जाये तो वर्ष 1901 की जनगणना में नगर की कुल जनसंख्या 7393 व्यक्ति थी जो 1911 में 21.06 प्रतिशत की गति से घटती हुई 5836 व्यक्ति ही रह गई थी। 1921 की जनगणना में बढ़त की प्रवृत्ति (10.86 प्रतिशत) देखी गई और जनसंख्या बढ़कर 6470 व्यक्ति हो गई। जनगणना वर्ष 1931 से लेकर 2001 तक की जनसंख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। 1961 तक वृद्धि दर 40 प्रतिशत से नीचे रही तथा 1971 में 46.12 प्रतिशत रही। यहां उल्लेखनीय है कि जनगणना वर्ष 1981 में सर्वाधिक वृद्धि 131.39 प्रतिशत अंकित की गई जो अपने में एक रिकार्ड है। तत्पश्चात् 1981 में वृद्धि की दर 40.36 प्रतिशत तथा वर्ष 1991 की जनगणना में 41.70 प्रतिशत रही। वर्ष 2001 में जनसंख्या की वृद्धि दर में गिरावट रही जो 27.51 अंकित की गयी तथा जनसंख्या बढ़कर 64740 व्यक्ति हो गयी। विस्तृत विवरण हेतु सारणी क्रमांक 4.2 दृष्टव्य है। नगर की शुद्ध जनसंख्या वृद्धि व मानचित्रीय प्रदर्शन क्रमांक 4.2 में दर्शाया गया है।

सारणी क्रमांक 4.2

नगर औरैया : नगरीय जनसंख्या वृद्धि 1901-2001

क्र0	जनगणना दशक	औरैया	शुद्ध वृद्धि/ह्रास	वृद्धि/ह्रास % में
1	1901	7393	——	———
2	1911	5836	—1557	21.06
3	1921	6470	634	10.86
4	1931	7087	617	09.54
5	1941	9840	2753	38.85
6	1951	13378	3538	35.96
7	1961	17463	4085	30.54
8	1971	25517	8054	46.12
9	1981	35815	10298	40.36
10	1991	50772	14957	41.76
11	2001	64740	13968	27.51

स्रोत : जनगणना सी0डी0 वर्ष 2001

नगरीय जनसंख्या वृद्धि : नगर फफूंद

औरैया की ही भांति फफूंद नगर 1901 से ही नगर की कोटि में है। इस जनगणना में यहां की कुल जनसंख्या 7605 व्यक्ति थी जो 1911 में घटकर 7156 व्यक्ति हो गई है। 1921 की जनगणना में (–) 8.97 प्रतिशत की दर से घटत पुनः 1931 में 8.48 प्रतिशत की घटत और 1941 की जनगणना में क्रमशः 14.33 प्रतिशत की वृद्धि 1951 में एवं (–) 9.16 प्रतिशत की घटत अंकित की गई। जनगणना 1961 व 1971 में इस नगर को अवर्गीकृत कर दिया गया तथा 1981 की जनगणना में पुनः नगर घोषित किया गया। तत्पश्चात आज तक वृद्धि की प्रवृत्ति बनी हुई है।

जनगणना वर्ष 1991 में सर्वाधिक (+26.99 प्रतिशत) वृद्धि अंकित

की गई थी। जनगणना दशक 2001 में +25.84 प्रतिशत की दर से जनसंख्या बढ़ रही है। वर्ष 1991 की तुलना में घटी वृद्धि दर इस तथ्य की परिचायक है कि अब लोगों में परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता आ गई है। विस्तृत विवरण हेतु सारणी क्रमांक 4.3 दष्टव्य है।

सारणी क्रमांक 4.3

नगर फफूंद : नगरीय जनसंख्या वृद्धि 1901-2001

क्र0	जनगणना दशक	औरैया	शुद्ध वृद्धि/ह्रास	वृद्धि/ह्रास % में
1	1901	7605	——	———
2	1911	6156	—1557	—19.05
3	1921	5604	—552	—08.97
4	1931	5129	—475	—08.48
5	1941	5864	735	14.33
6	1951	5327	—537	—09.16
7	1961	अवर्गीकृत	————	————
8	1971	अवर्गीकृत	————	————
9	1981	9599	————	————
10	1991	12190	2591	26.99
11	2001	15340	3150	25.84

स्रोत : जनगणना सी0डी0 वर्ष 2001

नगरीय जनसंख्या वृद्धि : दिबियापुर :-

सारणी को देखने से ज्ञात होता है कि 1981 की जनगणना में दिबियापुर पहली बार कस्बा बना था और इसकी जनसंख्या 8328 व्यक्ति थी। वर्ष 1991 में जनसंख्या बढ़कर 13687 व्यक्ति हो गई। जनगणना वर्ष 2001 में यहां की जनसंख्या 37.24 प्रतिशत की दर से बढ़ती हुई 21142 व्यक्ति हो गई। विस्तृत जानकारी हेतु सारणी क्रमांक 4.4 दृष्टव्य है।

सारणी क्रमांक 4.4

नगर दिबियापुर : नगरीय जनसंख्या वृद्धि 1981-2001

क्र0	जनगणना दशक	औरैया	शुद्ध वृद्धि/ह्रास	वृद्धि/ह्रास % में
1	1981	8328	————	————
2	1991	13687	5359	64.35
3	2001	20595	6908	50.47

स्रोत : जनगणना सी0डी0 वर्ष 2001

नगरीय जनसंख्या वृद्धि : अटसू :-

सारणी क्रमांक 4.5 को देखने से परिलक्षित होता है कि अटसू भी वर्ष 1981 से ही नगर कोटि में आया है। इस समय यहां की जनसंख्या 7280 व्यक्ति थी जो 1991 में बढ़कर 8258 तथा 2001 में बढ़कर 10593 हो गई। तत्पश्चात 17.14 प्रतिशत की दर से बढ़ती जनसंख्या 1991 में 8528 व्यक्ति व 24.21 प्रतिशत की दर से बढ़कर 2001 में 10593 व्यक्ति हो गई। विस्तृत विवरण हेतु सारणी 4.5 दृष्टव्य है।

सारणी क्रमांक 4.5

नगर अटसू : नगरीय जनसंख्या वृद्धि 1981-2001

क्र0	जनगणना दशक	औरैया	शुद्ध वृद्धि/ह्रास	वृद्धि/ह्रास % में
1	1981	7280	————	————
2	1991	8528	1248	17.14
3	2001	10593	2065	24.21

स्रोत : जनगणना सी0डी0 वर्ष 2001

नगरीय जनसंख्या वृद्धि : अजीतमल :-

सारणी क्रमांक 4.6 को देखने से स्पष्ट परिलक्षित होता है कि अजीतमल कस्बा सर्वप्रथम जनगणना वर्ष 1981 में नगर कोटि में आया और

उसकी तत्कालीन जनसंख्या 13423 व्यक्ति थी। जो 1991 में 36.57 प्रतिशत की दर से बढ़कर 18332 व्यक्ति हो गई।

सारणी क्रमांक 4.6

नगर अजीतमल : नगरीय जनसंख्या वृद्धि 1981-2001

क्र0	जनगणना दशक	औरैया	शुद्ध वृद्धि/ह्रास	वृद्धि/ह्रास % में
1	1981	13423	————	————
2	1991	18332	4909	36.57
3	2001	24549	6217	33.91

स्रोत : जनगणना सी0डी0 वर्ष 2001

जनगणना वर्ष 1991 में इसकी जनसंख्या बढ़कर 18332 व्यक्ति हो गई और सर्वाधिक 36.57 प्रतिशत की वृद्धि दर अंकित की गई। जनगणना वर्ष 1991 से 2001 के मध्य वृद्धि दर बढ़कर 33.91 प्रतिशत रही और कुल जनसंख्या 24549 व्यक्ति हो गई। विस्तृत विवरण हेतु सारणी क्रमांक 4.6 दृष्टव्य है।

सारणी क्रमांक 4.7

नगर अछल्दा : नगरीय जनसंख्या वृद्धि 1981-2001

क्र0	जनगणना दशक	औरैया	शुद्ध वृद्धि/ह्रास	वृद्धि/ह्रास % में
1	1981	5688	————	————
2	1991	7144	1456	25.60
3	2001	8361	1217	17.04

स्रोत : जनगणना सी0डी0 वर्ष 2001

नगरीय जनसंख्या वृद्धि : अछल्दा :-

जनपद औरैया में स्थित अछल्दा भी प्रथम बार जनगणना वर्ष 1981

में नगर कोटि में सम्मिलित किया गया और इस जनगणना में इसकी जनसंख्या 5688 व्यक्ति थी। आगामी दशक 1991 में 25.60 प्रतिशत की दर से बढ़ती हुई इसकी जनसंख्या 7144 व्यक्ति हो गई। वर्ष 2001 में 17.04 प्रतिशत की वृद्धि के साथ नगर की जनसंख्या बढ़कर 8361 व्यक्ति हो गयी। विस्तृत विवरण हेतु सारणी 4.7 दृष्टव्य है।

नगरीय जनसंख्या वृद्धि : नगर विधूना :-

सारणी क्रमांक 4.8 को परिलक्षित करने से स्पष्ट होता है कि विधूना 1981 की जनगणना से ही नगर कोटि के अन्तर्गत आया। इस जनगणना में यहां की जनसंख्या 12163 व्यक्ति थी जो 1991 में बढ़कर 17275 व्यक्ति रह गई। बढ़त की दर जनगणना वर्ष 2001 तक लगातार बनी रही और सर्वाधिक (58.47 प्रतिशत) बढत 1991 में अंकित की गई। निरन्तर बढ़ती जा रही जनसंख्या का परिणाम यह निकला कि 2001 की जनगणना में यह नगर 24789 व्यक्तियों वाला नगर हो गया। विस्तृत विवरण हेतु सारणी 4.8 देखी जा सकती है।

सारणी क्रमांक 4.8

नगर विधूना : नगरीय जनसंख्या वृद्धि 1981-2001

क्र0	जनगणना दशक	औरैया	शुद्ध वृद्धि/ह्रास	वृद्धि/ह्रास % में
1	1981	12163	————	————
2	1991	19275	7172	58.47
3	2001	24789	5514	28.60

स्रोत : जनगणना सी0डी0 वर्ष 2001

4.3 नगर श्रेणी और कोटि में परिवर्तन -

जनांकिकीय संरचना के परिवर्तनशील चरों में जनसंख्या वृद्धि, घनत्व, व्यावसायिक संरचना, आयु तथा लिंग संरचना इत्यादि प्रमुख है। प्रस्तुत अध्याय

में नगरों के प्रमुख जनांकिकीय घटकों का विश्लेषण तो किया ही गया है। इसके साथ ही अन्य बड़े एवं मध्यम आकारीय नगरों के जनांकिकीय अभिलक्षणों को भी तुलनात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

2001 की जनगणना के अनुसार जनपद की जनसंख्या 1179993 थी जिसमें से 1011026 ग्रामीण एवं 168967 नगरीय थी। इस प्रकार कुल जनसंख्या का 14.32 नगरीय क्षेत्र में निवास करती है। 1901 में जनपद की नगरीय जनसंख्या 14997 व्यक्ति थी जिसमें पिछले 100 वर्षो में 1026.60 प्रतिशत वृद्धि हुई जो कि सम्पूर्ण उ0प्र0 की तुलना में काफी अधिक है। पिछले 10 दशकों में सर्वाधिक नगरीय जनसंख्या वृद्धि 1981–91 के मध्य 404.81 प्रतिशत रही। इससे स्पष्ट है कि वर्तमान समय में नगरीयकरण की प्रक्रिया तीव्रगति से चल रही है। ग्रामीण विकास में नगर अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। अतः उनके जनांकिकीय अभिलक्षणों का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। 2001 की जनगणना के अनुसार जनपद में कुल 7 नगरीय केन्द्र हैं, जबकि ग्रामों की संख्या 841 है। इस प्रकार प्रत्येक नगरीय केन्द्र औसत रूप से 120 ग्रामों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। यह अनुपात ग्रामों तथा नगरों के अनुबन्धन की औसत स्थिति को प्रदर्शित करता है।

भारतीय जनगणना विभाग नगरों की परिभाषा में कुछ न कुछ परिवर्तन करता आया है इस कारण विभिन्न दशकों में नगरों की संख्या में परिवर्तन देखने को मिलता है। 1981 में जनगणना विभाग द्वारा किसी स्थान को निम्न लक्षणों के आधार पर नगर स्वीकार किया गया –

(अ) सभी संविधानिक नगर जैसे सभी नगर महापालिकाएं, नगर पालिकाएं, टाउन एरिया तथा नोटोफाइड क्षेत्र।

(ब) सभी ऐसे स्थान जो निम्न लक्ष्यों को संतुष्ट करते हैं –

1. उनकी जनसंख्या कम से कम 5000 हो,

2. कुल कार्यशील पुरुष जनसंख्या का 75 प्रतिशत कृषि कार्यो के अतिरिक्त अन्य कार्यो में लगा हो तथा
3. उनकी जनसंख्या घनत्व कम से कम 400 व्यक्ति/वर्गकिमी0 अथवा 1000 व्यक्ति प्रति वर्ग मील हो। 1961 तथा 1971 की जनगणना में नगरों की परिभाषा पर विचार करते समय पशुचारण अथवा पशुपालन, मछली का शिकार करना, लकड़ी काटना, शिकार करना, बगीचा अथवा फलोद्यान लगाना आदि कार्य औद्योगिक कार्य वर्ग द्वितीय के अन्तर्गत अर्थात अकृषित कार्यो में रखे गये। परन्तु 1981 में एक छोटा परन्तु सार्थक परिवर्तन किया गया, इस परिवर्तन के अनुसार उपर्युक्त कार्यो को कृषि कार्यो के अन्तर्गत रखा गया। इस प्रकार जनपद में जहां 1961 व 1971 में केवल 5 नगर थे वहीं 2001 में बढ़कर उनकी संख्या 9 हो गई।

नगरों के जनांकिकीय अभिलक्षणों का अध्ययन करने से पूर्व नगरीय केन्द्रों को जनसंख्या वृद्धि का अध्ययन करना अनिवार्य हो जाता है। नगरों के विकास एवं नियोजन तथा उनकी भूमि उपयोग की समस्याओं के समाधान हेतु जनसंख्या वृद्धि सम्बन्धी अध्ययन आवश्यक है।

नगर वर्ग के अनुसार जनसंख्या :-

नगरों की जनसंख्या का अध्ययन और विश्लेषण करते समय यह भी आवश्यक हो जाता है कि कुल नगरीय जनसंख्या में नगरों का कितना अंश है, बड़े और मध्यम नगरों की तुलना में उनका क्या स्थान है। अतः यहां नगरीय जनसंख्या का विश्लेषण विभिन्न वर्गो के अनुसार किया गया है। भारतीय जनगणना विभाग ने नगरेां को 5 वर्गो में विभाजित किया है।

जनपद औरैया में जनगणना वर्ष 2001 के अनुसार औरैया एकमात्र मध्यम श्रेणी का बड़ा नगर (64740 व्यक्ति) है। मध्यम आकार के नगरों में 50000 से 99999 की कोटि का एक नगर है जबकि इसी मध्यम वर्ग में 20000 से 50000 की कोटि में तीन नगर क्रमशः दिबियापुर (20595 व्यक्ति), अजीतमल (24549 व्यक्ति) तथा विधूना (24789 व्यक्ति) हैं। लघु नगरों की कोटि 10000 से 19999 के वर्ग में भी दो नगर क्रमशः फफूंद (15340 व्यक्ति) तथा अटसू (10593 व्यक्ति) हैं। 10000 से कम जनसंख्या वाले लघु नगर की संख्या 1 है जो अछल्दा (8361 व्यक्ति) है।

सारणी क्रमांक 4.9

जनपद औरैया : नगरीय वर्गीकरण (2001)

श्रेणी	जनसंख्या 2001	वर्ग का नाम	नगर संख्या
1.	100000 से अधिक	**बड़े नगर**	कोई नहीं
2.	50000 से 99999	**मध्यम नगर I**	औरैया।
3.	20000 से 49000	**मध्यम नगर II**	दिबियापुर, अजीतमल व विधूना।
4.	10000 से 19999	**लघु नगर I**	फफूंद, अटसू।
5.	10000 से कम	**लघु नगर II**	अछल्दा।

4.4 नगरों का जनघनत्व –

सारणी क्रमांक 4.10 को देखने से स्पष्ट होता है कि औरैया जनपद में 7 नगर है जिनका क्षेत्रफल 36.90 वर्ग कि0मी0 जनसंख्या 168967 व जनघनत्व 4579.05 प्रति वर्ग कि0मी0 है। क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा नगर औरैया (8.00 वर्ग किमी0) व सबसे छोटा नगर दिबियापुर (3.25 वर्ग कि0मी0) है। जनसंख्या की दृष्टि से सबसे बड़ा नगर औरैया (64740) जहॉ एक वर्ग कि0मी0 में 8092.5 व्यक्ति निवास करते है। वहीं दूसरी ओर सबसे छोटा नगर अछल्दा (8361) है। जिसमें 1 वर्ग कि0मी0 में 1623.50 व्यक्ति निवास करते है। अटसू, अछल्दा विकासखण्डों में 2000 से कम

व्यक्ति एक वर्ग कि0मी0 में निवास करते है। 2000 से 5000 व्यक्ति अजीतमल व फफूंद विकासखण्डों में प्रति वर्ग कि0मी0 में निवास करते है, औरैया दिबियापुर, विधूना, विकासखण्डों में 1 वर्ग कि0मी0 में 5000 से अधिक व्यक्ति निवास करते है।

सारणी क्रमांक - 4.10

औरैया जनपद : नगरीय जनघनत्व (प्रति वर्ग कि0मी0), वर्ष 2001

क्र0 सं0	नगर का नाम	क्षेत्रफल (वर्गकिमी0 में)	जनसंख्या	जनघनत्व
1	औरैया	08.00	64740	8092.50
2	विधूना	04.70	24789	5274.26
3	अजीतमल	05.00	24549	4909.80
4	दिबियापुर	03.25	20595	6336.92
5	फफूंद	05.00	15340	3068.00
6	अटसू	05.80	10593	1826.38
7	अछल्दा	05.15	08361	1623.50
	जनपद औरैया	36.90	168967	4579.05

4.5 स्त्री-पुरूष अनुपात (लिंगानुपात) -

लिंग अनुपात किसी क्षेत्र में स्त्री–पुरूष के अनुपात को कहते है। लिंग अनुपात किसी क्षेत्र विशेष में प्रचलित सामाजिक–आर्थिक दशाओं का सूचक है, एवं क्षेत्रीय विश्लेषण का एक महत्वपूर्ण उपकरण है।[4] इसका प्रभाव जनसंख्या वृद्धि, विवाह दर, व्यावसायिक संरचना आदि, जनांकिकीय तत्वों पर पड़ता है, तथा लिंग अनुपात का ज्ञान रोजगार एवं उपभोग प्रतिरूप, सामाजिक आवश्यकताओं तथा किसी समुदाय की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं को समझने में सहायक सिद्ध होता है।[5] इस प्रकार क्षेत्रीय भू–दृश्यों का विश्लेषण करने के लिए लिंग अनुपात अतिरिक्त साधन एवं सामग्री प्रदान करता है।[6] अतः खाद्य

संसाधनों के उत्पादन तथा उपभोग करने की सीमाएं निर्धारित करने में लिंग अनुपात महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

सारणी क्रमांक - 4.11

औरैया जनपद : ग्रामीण लिंगानुपात, वर्ष 2001

क्र0	विकासखण्ड का नाम	पुरूष जनसंख्या	स्त्री जनसंख्या	लिंगानुपात
1	ऐरवा कटरा	60721	51255	844
2	अछल्दा	77404	66459	859
3	विधूना	76959	94291	874
4	सहार	79936	69070	864
	तहसील विधूना	**295020**	**254075**	**861**
5	भाग्य नगर	86069	72662	844
6	अजीतमल	71893	60347	839
7	औरैया	93160	77800	835
	तहसील औरैया	**251122**	**210809**	**839**
	जनपद औरैया	**54614**	**464884**	**851**

4.6 आयु संरचना -

किसी भी भौगोलिक क्षेत्र में आयु संरचना के द्वारा मानव शक्ति की पूर्ति, आश्रित व्यक्तियों का अनुपात, प्रजननता एवं समस्त सामाजिक, आर्थिक गतिविधियों को निर्देशित करती है। इसके साथ–साथ क्रियाशील जनसंख्या एवं भविष्य की श्रमिक शक्ति का बोध भी आयु संरचना द्वारा किया जाता हैं जिन क्षेत्रों में 15–45 वर्ष के मध्य स्त्रियों की जनसंख्या अधिक होती है। वहॉ जन्मदर के अधिक होने के कारण बच्चों की संख्या में वृद्धि होती है। जिससे आश्रित जनसंख्या में वृद्धि एवं कार्यशील जनसंख्या में ह्रास हो जाता है। फलस्वरूप जीवन स्तर निम्न एवं विभिन्न प्रकार की सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएं उत्पन्न हो जाती है।[7] इसी प्रकार जनसंख्या

का स्थानान्तरण शहरों की ओर अधिक होता है तो वृद्धि लोगों की संख्या में वृद्धि तथा बालकों की संख्यात्मक वृद्धि अवरूद्ध हो जाती है।[8] अतः जनसंख्या का आयुवर्ग जन्मदर, मृत्युदर तथा स्थानान्तरण के अनुसार निर्मित होता हैं जिसको क्षेत्र विशेष की सामाजिक, आर्थिक, दशाएं प्रभावित करती है।[9] इस प्रकार आयु व लिंग संरचना के दो पहलू है। जिनका अध्ययन जनसंख्या वृद्धि एवं उससे उत्पन्न समस्याओं के निराकरण तथा उदरपूर्ति के नियोजन हेतु अति आवश्यक है।

4.7 व्यावसायिक प्रतिरूप –

व्यावसायिक संरचना मूलरूप से विभिन्न प्रकार की आर्थिक क्रियाओं का सूचक होती है, जिसमें मानव जीविकोपार्जन हेतु विभिन्न क्रियायें करता हैं इसका प्रतिरूप क्षेत्र विशेष में उपलब्ध संसाधनों, प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक कारक की दशाओं के द्वारा निर्मित होता है, अर्थात्, व्यावसायिक संरचना का अर्थ, क्षेत्र में विभिन्न कार्यों में लगी जनसंख्या से होता है जिसका कार्यिक जनसंख्या भी कहते है। किसी भी भौगोलिक क्षेत्र की व्यावसायिक संरचना क्षेत्र विशेष में संसाधनों का उत्पादन करने वाली कार्यिक जनशक्ति का प्रतीक होती है।[10]

4.8 कार्यशील जनसंख्या –

कार्यिक जनसंख्या, जनसंख्या के उस वर्ग को कहते है, जो आर्थिक दृष्टि से किसी भी उत्पादन में अपनी शारीरिक अथवा मानसिक गतिविधियों के साथ भाग लेती है।[11] इस कार्यिक शक्ति में लिंग, निवास एवं आयु के आधार पर परिवर्तन होता रहता है, अर्थातः किसी भी क्षेत्र विशेष में व्यवसाय में जितनी जनसंख्या जुड़ी होगी वह क्षेत्र उतना ही आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न एवं विकसित होता है, तथा वहॉ के लोग खुशहाली का जीवन व्यतीत करते है, और जिस क्षेत्र में कार्यशील जनसंख्या कम होती है, वह क्षेत्र अविकसित या विकासशील होता है, और वहॉ के लोगों का जीवन स्तर निम्न होता है।

किसी भी क्षेत्र की व्यावसायिक संरचना क्षेत्र विशेष में संसाधनों का उत्पादन करने वाली कार्यिक जनशक्ति का प्रतीक है।[12] मूलतः व्यावसायिक संरचना विभिन्न प्रकार की आर्थिक क्रियाओं का सूचक होती है जिसमें मानव जीविकोपार्जन के लिये विभिन्न क्रियायें करता है तथा इसका प्रतिरूप क्षेत्र विशेष में उपलब्ध भूमि संसाधनों, सामाजिक कारकों एवं सांस्कृतिक दशाओं के द्वारा निर्मित होता है। कार्यिक जनसंख्या (कर्मकर) जनसंख्या के उस वर्ग को कहते हैं जो अर्थोपार्जन के लिये किसी भी उत्पादन में अपनी शारीरिक अथवा मानसिक गतिविधियों के साथ भाग लेता है।[13] इस कार्यिक शक्ति में लिंग तथा आयु के आधार पर परिवर्तन होता रहता है क्योंकि नगरीय क्षेत्रों में बच्चे एवं महिलायें आर्थिक गतिविधियों में अधिक भागीदार होते हैं।[14]

4.9 जन्म एवं मृत्युदर -

जनसंख्या की धनात्मतक वृद्धि का विश्लेषण करने के लिये यह आवश्यक है कि उन तत्वों का निर्धारण किया जाये जिनकी वजह से जनसंख्या में वृद्धि होती है। जनसंख्या वृद्धि के मुख्य निर्धारक तत्व जन्म दर एवं मृत्यु दर होते है। उत्तर प्रदेश में जनसंख्या का आकार जन्म दर एवं मृत्यु दरों से सम्बन्धित आंकड़ों निम्न सारणी में दर्शायें गये हैं।

सारणी क्रमांक 4.12

जनपद औरैया : जनसंख्या वृद्धि के उत्तरदायी सूचकांक (वर्ष 2001)

क्र0 सं0	सूचक दशक	भारत वर्ष	उत्तर प्रदेश	जनपद औरैया
1	जीवन की प्रत्याशा पुरूष	59.70	57.10	57.10
2	जीवन की प्रत्याशा स्त्री	60.90	56.20	56.10
3.	दम्पत्ति सुरक्षा दर	45.50	39.15	41.10

वर्ष 1901 से 1921 तक कम होती हुई आबादी का यही कारण

है कि मृत्यु–दर जन्म–दर से अधिक थी जिसके फलस्वरूप पैदा होने वालों की संख्या कही कम थी। परन्तु वर्ष 1921 के बाद से ही जन्म दर एवं मृत्यु दर का अन्तराल शनैःशनैः विस्तृत होता गया। जिससे जन्म दर पर वांछित नियन्त्रण न हो पाने के कारण समस्या से विकराल रूप ले लिया। विभिन्न शोध अध्ययनों से यह प्रमाणित हो चुका है कि जन्म दर के स्तर को शिशु मृत्यु दर, विवाह की उम्र, प्रजननता, शैक्षिक स्तर आदि घटक प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित करते है। जसे देश में शिशु मृत्यु दर अधिक, वैवाहिक, आयु कम, शिक्षा का स्तर निम्न तथा प्रति व्यक्ति आय कम होती है। वहॉ जन्म दर प्रयासोपरान्त भी अधिक होती है तथा इसके विपरीत मृत्यु दर कम। उत्तर प्रदेश इन सभी घटकों में उच्च जन्म दर की स्थिति का प्रतिनिधित्व करता है।

4.10 जनसंख्या प्रक्षेपण –

स्वतंत्रता के बाद के वर्षो में नगरीय जनसंख्या की वृद्धि की तीव्रता को शोधकर्ताओं ने गंभीरता से महसूस किया है। जनसंख्या वृद्धि, जनांकिकीय का महत्वपूर्ण अभिलक्षण है। भूगोलवेत्ता, जनांकिकीयविद् परिस्थिति विज्ञानी तथा नगर नियोजक इत्यादि विद्वान जनसंख्या के अनुमान (पूर्वानुमान) के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के उद्देश्य से गहन अध्ययन तथा गंभीरतापूर्वक कार्य कर रहे हैं। किसी भी नगर के सर्वतोमुखी विकास के लिये नियोजन करते समय जनसंख्या सबसे महत्वपूर्ण तथ्य है। सर्वमान्य तथ्य है कि जनसंख्या के अत्यधिक एवं तीव्र वृद्धि की परिणति बेरोजगारी, आवास समस्या तथा सामान्य नागरिक सुविधाओं के अभाव के रूप में होती है। यही कारण है कि नगर नियोजन जनसंख्या की गणित और उसके भी विशेष कर भविष्य की जनसंख्या का सही पूर्वानुमान अत्यन्त अनिवार्य हो जाता है। सामुदायिक जीवन के प्रत्येक पक्ष के नियोजन निष्कर्षो के लिये विगत वर्षो की जनसंख्या की जानकारी आधारभूत तथ्य है।

किसी भी स्थान विशेष को भविष्य की जनसंख्या सम्बन्धी जानकारी, जनसंख्या प्रक्षेप के नाम से जाना जाता है। जनसंख्या प्रक्षेप के लिये कई विधियां जैसे सामान्य समाश्रयण निदर्श, लघुगणक अथवा चर घातांकों, वृद्धि प्रतिमान प्रचलन में है। सामान्य तौर पर समाश्रयण निदर्श द्वारा जनसंख्या अनुमान सामान्य से कम होता है अतः परघातांकी सूत्र का प्रयोग जनसंख्या प्रक्षेप के लिये किया जाता है। इस सूत्र के द्वारा किसी भी स्थान विशेष को प्रक्षेपित जनसंख्या ज्ञात की जा सकती है परन्तु ऐसे नगर जो वर्गावनत हो जाते हो अथवा जिनमें अध्ययन वर्ष के एक दशक में किन्हीं विशिष्ट कारणों से जनसंख्या में एकाएक वृद्धि हो जाती है उनमें उपरोक्त सूत्र द्वारा आंकलित प्रक्षेपित जनसंख्या अप्रत्याशित होती है।

सारणी क्रमांक - 4.13

औरैया जनपद : नगरों की प्रक्षेपित जनसंख्या

क्र0	नगर का	विगत जनसंख्या		प्रक्षेपित जनसंख्या			
सं.	नाम	1991	2001	2011	2021	2031	2041
1	औरैया	50772	64740	80588	97245	120564	150126
2	विधूना	19275	24789	30857	38469	47694	59389
3	अजीतमल	18332	25459	30581	38125	47267	58857
4	दिबियापुर	13687	20595	25655	31984	39654	49377
5	फफूंद	12190	15340	19109	23823	29563	36812
6	अटसू	8528	10593	13196	16451	20396	25397
7	अछल्दा	7144	8361	10415	12984	16097	20043

उल्लिखित सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि औरैया नगरा की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि होती जा रही है। जनगणना दशक 2041 में बढ़कर 150126 व्यक्ति हो जायेगी। इसका प्रमुख कारण इस नगर का जनपद का मुख्यालय होना है। दूसरे स्थान पर बिधूना नगर की जनसंख्या

2001 की तुलना में बढ़कर 59389 व्यक्ति हो जाने की सम्भावना है। इसका कारण इस नगर का तहसील मुख्यालय होना एवं यातायात के साधनों का समुन्नत होना है।

तृतीय कोटि का नगर अजीतमल भी वर्ष 1991 से 2041 तक समान अन्तर के साथ वृद्धि कर रहा है। जबकि विधूना की तुलना में यह नगर अजीतमल विकासखण्ड मुख्यालय ही है। परन्तु आगरा–इटावा–कानपुर मुख्य मार्ग पर स्थित होने के साथ–साथ लम्बे समय से शिक्षा का प्रमुख स्थल रहा है। उक्त दोनों नगरों के समानान्तर चतुर्थ कोटि का नगर दिबियापुर तीव्र जनसंख्या वृद्धि दर्शाता है। इसका कारण इस नगर का दिल्ली–हाबड़ा रेलमार्ग पर स्थित होना तथा गेल (GAIL) का प्रमुख स्थल होना भी है। विस्तृत विवरण हेतु सारणी क्रमांक 4.13 दृष्टव्य हैं

Reference/सन्दर्भ

1.	Mishra, R.P.	Growth Pole Hypothesis Re-examined, United National Institute for Social Development, Geneva, 1970.
2.	Raza, Moonis,	India : Urbanization and National Development, In Honzo, M. (edit) Urbanization & Regional Development, Maruzen Asia, Vol. 6, 1981.
3.	Mathur, O.P. (edit)	Small and Intermediate towns in Developing countries, proceeding of the seminar on the role of small and intermediate cities in national development. UNCRD, Nagoya, Japan, 1981.
4.	Census of India,	Indian Census of Prespective office of the Registrar General India, Ministary of Home Affairs (New Delhi) 1971, p. 169.
5.	Franklin, S.H.,	The Pattern of Sex ratio in NewZeland, Economic Geography, Vol. 32, 1956, p. 168.
6.	Chandana, R.C. & Siddhu, S. Manjit	Introduction to Population Geography, 1980, p. 31.

7. Chopra, P.N. (Ed.) The Gazetteer of India, Indian Union, Vol. III, 1975, p. 130.

8. Clarke, J.I., Population Geography, Pergamon Press, Oxford London, 1972, p. 74.

9. Chandana, R.C., "Geography of Population", 2003, p. 32.

10. V.K., Srivastava, Habitat and Economy in Upper son Basin (1973), p. 4.

11. Halbwadis, M., Population and Society, 1975, pp. 135-145.

12. Srivastava, V.K., Habitat and Economy in Upper Son Basin (1973), P. 4.

13. Census of India, Indian Census in Perspective office of the Registrar General, India, Ministry of Home Affairs, New Delhi (1971) P. 169.

14. Clark John, I., Population Geography and Developing Countries, Pergamon Press, New York (1971) P. 435.